REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 8 | MAY - 2025

हरियाणा में उच्च शिक्षा नीति का एक ऐतिहासिक विश्लेषण (1966–2011)

Monika Saini
Ph.D Research Scholar,
Department of History and Archaeology,
Maharshi Dayanand University, Rohtak.

सारांश

शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है, जिसके आधार पर मनुष्य सभ्यता और प्रकृति मैं सर्वोच्च सुख–सुविधाओं के साथ स्वयं को मजबूत कर पाया है। ए.आर. देसाई, ने भारतीय राष्ट्रीयवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि पृष्ठ –110 में बताया है कि प्राचीन काल में भारत में शिक्षा की समुचित व्यवस्था थी। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय में प्रत्येक से 10 हजार से भी अधिक देश– विदेशी के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। मध्यकालीन आक्रमणों ने शक्ति पर निर्भर प्रशासन क्षेत्र एवं बदलती व्यवस्थाओं में पूर्ण प्रचलित शिक्षा प्रणाली को इस काल के शिक्षकों ने बताए रखना का प्रयास भी किया। शिक्षा से ही समाज और संचार में सब कुछ प्राप्त हो सकता है।यह शोध पत्र 1966 से 2011 तक हरियाणा, भारत में उच्च शिक्षा नीति के विकास का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह नीतियों, संस्थागत वृद्धि और प्रमुख सुधारों की जांच करता है, जिसमें पहुंच, गुणवत्ता, समानता और स्थिरता पर ध्यान दिया गया है। सरकारी रिपोर्ट, शैक्षिक अध्ययन और नीति दस्तावेजों पर आधारित यह अध्ययन हरियाणा के उच्य शिक्षा परिदृश्य पर राष्ट्रीय और राज्य नीतियों के प्रभाव को उजागर करता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच की कमी, लैंगिक असमानता और निजी संस्थानों की भूमिका जैसे मुद्दों को भी संबोधित करता है, जो राज्य की क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रयासों को दर्शाता है।

मूल शब्दः संस्थागत, शिक्षानीति, सरकारी रिपोर्ट, गुणवत्ता, असमानता, निजी संस्थान।

प्रस्तावना

प्राचीन काल में भारत में शिक्षा की समुचित व्यवस्था थी। तक्षशिला, नालंदा विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय में प्रत्येक से 10 हजार से भी अधिक देश विदेशी के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। मध्यकालीन आक्रमणों ने शक्ति पर निर्भर प्रशासन क्षेत्र एवं बदलती व्यवस्थाओं में पूर्ण प्रचलित शिक्षा प्रणाली को इस काल के शिक्षकों ने बताए रखना का प्रयास भी किया।[1] 1 नवंबर, 1966 को पंजाब के पुनर्गठन के बाद हरियाणा के गठन के साथ, राज्य ने एक प्रारंभिक उच्च शिक्षा प्रणाली को विरासत में प्राप्त किया, जो बाद में महत्वपूर्ण रूप से विकसित हुई। शिक्षा की संरचना में प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद उच्च शिक्षा विद्यालय तथा विद्यालय एक

[1] ए.आर. देसाई, भारतीय राष्ट्रीयवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि पृष्ठ–110

विकसित संरचना है जो विभिन्न चरणों से चलकर वर्तमान में स्थापित है। इसके साथ व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं।

हरियाणा में विद्यालय में विश्वविद्यालयों में शिक्षा के विभिन्न स्तर हैं, जिसमें निम्न प्राथमिक उच्च प्राथमिक हाई स्कूल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और उच्चतर माध्यमिक व्यावसायिक शिक्षा शामिल है राज्य के सभी शिक्षण संस्थानों की देखरेख शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा की जाती है। आर्य समाज अपने स्वरूप में पुनरुत्थानवादी और विषय–वस्तु में सुधारवादी था। इसने हरियाणा में गहरा प्रभाव डाला।[2] मूल रूप से 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू किया गया यह संगठन हिंदुओं, विशेषकर युवाओं के बीच लोकप्रिय हो गया। शिक्षा का भारत में शक्तिशाली प्रभाव रहा है वैदिक युग के साधारण कवियों से लेकर आज के बंगाली दार्शनिकों तक शिक्षकों और विद्वानों भी एक अविच्छिन्न श्रृंखला रही है। प्राचीन काल से ही सभी को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था।[3]

1857–1966 के दौरान शिक्षा व्यवस्था

1813 ई के चार्टर एक्ट द्वारा पहली बार शिक्षा के प्रति राजकीय उत्तरदायित्व को वहन वहन करते हुए, ब्रिटिश सरकार ने भारतीय क्षेत्रों में साहित्य, विज्ञान तथा विद्वानों के प्रोत्साहन के लिए प्रतिवर्ष एक लाख रुपया खर्च करने की व्यवस्था की। विलियम डब्ल्यू. हंटर, की एजुकेशन कमीशन ऑफ 1882, ए सोर्स बुक ऑफ मॉडर्न इंडियन एजुकेशन में 1797 से 1902, संस्करण द्वारा लिखित पुस्तक मे ब्रिटिश सिविल सेवक और इतिहासकार विलियम विल्सन हंटर के नेतृत्व में एक आयोग 1882 में आया जिसे इसी के नाम पर हंटर आयोग रखा गया इन्होने ब्रिटिश राज में शैक्षिक नीति को मानकीकृत करने के प्रयास में भारत के लोगों की शैक्षिक आवश्यकताओं के बारे में कई सिफारिशें कीं।

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान शिक्षा व्यवस्था में कई बदलाव हुए, और इन परिवर्तनों का प्रभाव हरियाणा पर भी पड़ा। इस समय के दौरान सरकारी सहायता प्राप्त निजी संस्थान जो मुख्य रूप से मिशनरी और सामाजिक संगठनों द्वारा स्थापित किए गए थे। 1857 के बाद, ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा के प्रसार में निजी संस्थाओं को सहयोग देने के लिए विभिन्न योजनाएं बनाई। इन योजनाओं के तहत निजी संस्थानों को सरकारी अनुदान प्राप्त हुआ, जिससे वे अपने स्कूल और कॉलेज खोलने और संचालन करने में सक्ष्म हुए। इन संस्थानों ने न केवल सामान्य शिक्षा, बल्कि महिला शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के प्रसार में भी योगदान दिया। हरियाणा में अग्रेजी राज्य की स्थापना से पूर्व शिक्षा गुरुकुलों, मस्जिदों, मन्दिरों, मदरसों, संस्कृत पाठशालाओं तथा गुरुमुखी पाठशालाओं में दी जाती थी।[4]

गठन के बाद का दौरान (1966–1980)

हरियाणा में शिक्षा को विभिन्न स्तरों पर विभाजित किया गया है शिक्षा की संरचना समाज के हर वर्ग को समानता के आधार पर अर्पित है चाहे वह किसी भी संस्कृति धर्म से हो। शिक्षा के दो प्रकार हैं औपचारिक और अनौपचारिक औपचारिक शिक्षा स्कूलों कॉलेजों और विश्वविद्यालय में दी जाती है। 1966 में हरियाणा के गठन के बाद, उच्च शिक्षा प्रणाली को पंजाब से अलग स्थापित करने की आवश्यकता थी। राज्य ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (स्थापना 1956) जैसे संस्थानों को विरासत में प्राप्त किया और ग्रामीण आबादी के लिए उच्च शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया। प्रारंभिक नीतियों ने कला और विज्ञान पर केंद्रित सरकारी कॉलेजों की स्थापना को प्राथमिकता दी। 1980 तक, राज्य के 92: स्कूल सरकारी नियंत्रण में थे, और यह प्रवृत्ति उच्च शिक्षा संस्थानों तक विस्तारित थी। हालांकि, सीमित धन और बुनियादी ढांचे ने ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच को असमान बना दिया। भारतीय विश्वविद्यालय आयोग (1902) लॉर्ड कर्जन ने सितम्बर 1901 ई. में शिमला में एक

[2] जे. नेहरू, डिस्कवरी ऑफ इंडिया (कोलकाता 1946), पेंगुइन इंडिया पब्लिशर, 2004, पृ.–235,
[3] जी. डब्ल्यू थोनस, भारत में ब्रिटिश शिक्षा का इतिहास और परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–1
[4] डॉ. एजाज अहमद, 'हरियाणा का इतिहास, कल्पना प्रका"ान, दिल्ली, 2023, पेज–184,

शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें सभी प्राप्तों के शिक्षा निदेशक एवं कुछ शिक्षा शास्त्रियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के पश्चात् भारत के वायसराय व गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने 1902 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया। 1913 का शिक्षा सम्बन्धी संकल्प पत्र दिसम्बर 1911 ई. में ब्रिटेन के सम्राट जार्ज पंचम भारत आये। उन्होंने 6 जनवरी 1912 ई. को कलकत्ता विश्वविद्यालय में इच्छा व्यक्त की, कि देशभर में स्कूल व कॉलेजों का जाल फैलाया जाए। इन स्कूलों व कॉलेजों में उद्योगों एवं कृषि सहित अन्य व्यवसायों की शिक्षा दी जाये। सम्राट जार्ज पंचम की इच्छा को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने 1913 ई. में एक संकल्प प्रकाशित किया, जिसकी निम्न सिफारिशें थीं। 19वीं सदी के आखिरी दशक में सनातन धर्म सभा हरियाणा में एक लोकप्रिय आंदोलन बन गई। शिक्षा के क्षेत्र में, कई सनातन धर्म स्कूल और बाद में कॉलेज स्थापित किए गए। दीन दयालु शर्मा ने दिल्ली में हिंदू कॉलेज, लाहौर में सनातन धर्म कॉलेज (अब अंबाला कैंट में), कलकत्ता में विशुद्धानंद विद्यालय और बॉम्बे में मारवाड विद्यालय जैसे कुछ निजी तौर पर प्रबंधित संस्थानों की स्थापना में मदद की।[5]

उदारीकरण और विस्तार (1981–2000)

1990 के दशक में भारत के आर्थिक उदारीकरण ने हरियाणा की उच्य शिक्षा नौतियों को प्रभावित किया, जिससे निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा मिला। इस अवधि में निजी कॉलेजी, विशेष रूप से तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा जैसे इंजीनियरिंग और प्रबंधन में वृद्धि देखी गई। नीतियों ने उच्च शिक्षा को आर्थिक मांगों के साथ जोड़ने का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय (1995) जैसे संस्थानों की स्थापना हुई। हालाकि, निजी संस्थानों की वृद्धि ने गुणवत्ता और समानता के बारे में विताएं पैदा की, क्योंकि पहुंच मुख्य रूप से शहरी क्षेत्री और समृद्ध समूहों तक सीमित रही।

हरियाणा में उच्च शिक्षण संस्थानो का योगदान

हरियाणा में कई प्रमुख निजी संस्थान स्थापित हुए, जिन्होंने स्थानीय समुदायों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई और समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर किसानों और महिलाओं, को शिक्षा के लाभ से अवगत कराया। अंग्रेजों ने अग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाकर कई स्कूल खोले तथा लोगों को नौकरी प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने का प्रोत्साहन दिया। बहुत सारे समाज तथा धर्म सुधार आन्दोलनों ने भी इस क्षेत्र में सराहनीय योगदान दिया। यह शोध उन संस्थानों के योगदान को रेखांकित करता है जिन्होंने हरियाणा में शिक्षा के सतर को ऊपर उठाने में मदद की। 21वीं सदी के प्रारंभ में हरियाणा की उच्य शिक्षा प्रणाली में आधुनिकीकरण देखा गया। राज्य सरकार ने गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नीतियां शुरू कीं, जैसे मान्यता अभियान और संकाय विकास कार्यक्रम।

सामाजिक–आर्थिक प्रभाव और चुनातियों

हरियाणा की उच्च शिक्षा नौतियों ने नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि की, जिसमें 2010–11 के अनुसार राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में छात्रों की संख्या में वृद्धि देखी गई हालांकि, महिलाओं और ग्रामीण आबादी के लिए पहुंच में असमानताएं बनी रहीं। निजी संस्थानों की वृद्धि ने पहुंच में सुधार किया, लेकिन अक्सर गुणवत्ता के बजाय लाभ को प्राथमिकता दी, जिसके परिणामस्वरूप शैक्षिक मानकों में असमानता आईइसके अतिरिक्त, गुरुग्राम जैसे क्षेत्रों में औद्योगिक विकास के साथ तकनीकी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने से मानविकी और सामाजिक विज्ञान के लिए धन की कमी हुई। ये चुनौतियां आर्थिक और सामाजिक उद्देश्यों को संतुलित करने वाली नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

[5] मित्तल, एस.सी. ष्हरियाणा एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (दिल्ली, 1986), पृ 70–71.

हरियाणा में महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था

महिलाओं की स्थिति को समाज की उन्नति के संकेतक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है और इस आधार पररू भारत ने बहुत ही निम्न स्थान प्राप्त किया 419 19वीं सदी में बंगाल में एक मजबूत ब्रह्मो आंदोलन देखा गया। गया। महिलाओं की शिक्षा के लिए ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे सुधारकों के प्रयासों ने भी पश्चिमी विचारों और शिक्षा के आगमन के साथ काफी अनुकूल स्थिति बनाई। बंगाल, महाराष्ट्र और उत्तर भारत में क्रमश : ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज और आर्य समाज के सामूहिक प्रयासों से बालिका शिक्षा के लिए आंदोलन को गति मिली। राष्ट्रवादी विमर्श में महिला शिक्षा को असमान प्रतिक्रिया मिली। ब्राह्मणवादी पितृसत्ता ने हमेशा महिलाओं को शिक्षा तक पहुँच से वंचित रखा था।[6]

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के शुरू में, उत्तर भारत महिला शिक्षा के मामले में देश के सबसे पिछड़े इलाकों में से एक था। 1904 में एनी बेसेंट ने लड़कियों की शिक्षाश शीर्षक से एक पुस्तिका लिखी, जिसमें उन्होंने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि भारतीय महिलाएँ शिक्षा से वंचित हैं, और इसे उन्होंने दिल्ली में थियोसोफिकल सोसायटी को भेजा, 22 उस समय, लड़कियों की शिक्षा कुछ अपवादों को छोड़कर ज्यादातर घर तक ही सीमित थी। अपर्णा बसु के अनुसार, एक अंधविश्वास था कि एक शिक्षित लड़की शादी के तुरंत बाद विधवा हो जाएगी और शिक्षा से विनम्र लडकियों को विद्रोही वेश्याओं में बदल दिया जाता है जो परिवार की शाति और सौहार्द को नष्ट कर देती है। इस संदर्भ में, तिलक ने माना कि महिलाओं की शिक्षा पुरुष वर्चस्व के लिए एक संभावित खतरा थी।

शोध–पत्र का महत्व

प्रस्तुत शोधपत्र हरियाणा में उच्च शिक्षा नीति (1966 – 2011) पर आधारित है जो शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करेगा शोध का महत्व इसीलिए भी बढ़ जाता है की हरियाणा में निजी संस्थाओं तथा सरकारी नीतियों के मध्य अंतसंदर्भ को प्रस्तुत करना है। हरियाणा में स्वतंत्रता पश्चात 1966 तक तथा इस इसके पश्चात हरियाणा में अस्तित्व में आजीवन पर शिक्षा में हुए परिवर्तन को उजागर करना है। वर्तमान हरियाणा में प्राथमिक माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा क्षेत्र में सरकार की नीतियों को प्रस्तुत करना आज उच्च शिक्षा निजी संस्थाओं का हिस्सा बनता जा रहा है। सरकार का पीछे हटना शिक्षा का व्यापार होता नजर आता है।

निष्कर्ष

शिक्षा की संरचना में प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद उच्च शिक्षा विद्यालय तथा विद्यालय एक विकसित संरचना है जो विभिन्न चरणों से चलकर वर्तमान में स्थापित है। इसके साथ व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं। हरियाणा में विद्यालय में विश्वविद्यालयों में शिक्षा के विभिन्न स्तर हैं. जिसमें निम्न प्राथमिक उच्च प्राथमिक हाई स्कूल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और उच्चतर माध्यमिक व्यावसायिक शिक्षा शामिल है राज्य के सभी शिक्षण संस्थानों की देखरेख शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा की जाती है। 1966 से 2011 तक हरियाणा की उच्च शिक्षा नीतियां आधारभूत विकास से लेकर राष्ट्रीय सुधारों के साथ शिक्षण तक की यात्रा को दर्शाती हैं। राज्य ने संस्थागत विस्तार और पहुंच में सुधार हासिल किया, लेकिन क्षेत्रीय असमानताएं लैंगिक असमानताएं और गुणवत्ता संबंधी चिंताएं बनी रहीं। भविष्य की नीतियों को समान संसाधन वितरण, संकाय विकास और मजबूत नीति कार्यान्वयन पर ध्यान देना चाहिए। यह विश्लेषण राष्ट्रीयांचे के भीतर राज्यस्तरीय नीतियों को संदर्भित करने के महत्व को रेखांकित करता है ताकि स्थानीय आवश्यकताओं की प्रभावी इग से संबोधित किया जा सके ।

[6] जेम्स मिल, ब्रिटिश भारत का इतिहास, कलासिक रिप्रिट, लन्दन, 2018

अन्य ग्रन्थ

मूल ग्रन्थ

इंपीरियल गजेटियर

1 हरियाणा जिला गबेटियर, फुलकियान राज्य जिंद और नामा, 1904 (परियाना शजिला गजेटियाला, मारनाव का इंपीरियल गजेटियर जेला नंतिम श्रृंखला) पंजाब 1908।
2 गुडगांव जिला, गजेटियर, 1910।
3 रोहतक जिला गजेटियर 1912।
4 हरियाणा में लड़कियों को मुफ्त शिता की राज्य नीति का प्रभाव भारत की शिता, भारत का अध्ययन 1835–1920 में ब्रिटिश नीति भारतीय दिशता विश्वकोश, खंड–11 (एल. जेड)।
5 पंजाब राज्य सांख्यिकीय गजेटियर, खंड–11, लाहौर राज्य, तालिकाएँ 1936
6 गोपाल मदन सिर छोटू राम, ए पोलिटिकल बायेग्राफी, दिल्ली, 1977।
7 सी. भारतीय महिला शिला और अल्टरकर ए.एस. 1976 हिन्दू की स्थिति, दिल्ली, 1987।
8 द्वितीयक स्त्रोत अग्रवाल मोहन चंदर, भारतीय नारी : विविध आयाम स्थिति, नई दिल्ली दिल्ली, 2003।
9 बरवाला जिला गजेटिर समस्त अम्बला जिला
10 शिक्षा विभाग, 1800–1947, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार।
11 पाक्षिक रिपोर्ट–1907–1947, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार।

द्वितीय स्त्रोत

1. थोनस, एफ. डब्ल्यू, भारत में ब्रिटिश शिक्षा, जार्ज बेल एंड संस लंदन, 1891
2. डौई जेम्स. एम. द पंजाब सेटलमेंट मैन्युवल, लाल बहादुर शास्त्री प्रकाशन अकादमी चतुर्थ संस्करण
3. पंजाब 1930।
4. अलतेकर, श्री ए.एस.एजुकेशन इन असिएंट इंडिया, नंदकिशोर और एजुकेशन, पब्लिशर द्वितीय संस्करण,
5. 1944।
6. राजा, डॉ. सी. कुनहन सम एस्पेक्ट्स ऑफ एजुकेशन इन असिएंट इंडिया, एडियर लाइब्रेरी, मद्रास 1950,
7. मुखर्जी, आर.के.,प्राचीन भारतीय शिक्षा, लंदन, 1951।
8. सरस्वती दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश 32 एडिशन, सोमेवत, 1958।
9. राय, लाल लाजपत, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, जीवन और कार्य,दिल्ली, 1960।
10. सुन्दरलाल, भारत में अंग्रेजी राज, खंड प्रथम और द्वितीयः
11. प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली 1960।
12. लक्ष्मीदत्त, ठाकुर, प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन, लखनउ, 1965।
13. ठाकुर, लक्ष्मीदत्त, प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन, लखनउ, 1965।
14. राय, लाला लाजपत, द आर्य समाज,लान्गमैन्स, ग्रीन एंड कम्पनी, नई दिल्ली, 1967।
15. प्रकाश, बुद्ध, ग्लिम्प्स ऑफ हरियाणा, कुरुक्षेत्र, 1967।
16. चंद्र, यादव कृपाल हरियाणा स्टडीज इन हिस्ट्री एंड कल्चर',कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र, 1968।
17. मुखर्जी, राधा कुमुद,एनसीएंट इंडियन एजुकेशन, मोतीलाल